kAlIstotraM parashurAmakRitaM

कालीस्तोत्रं परशुरामकृतम्

Document Information

Text title : kAlIstotramparashurAmakRitam

File name : kAlIstotramparashurAmakRitam.itx

Category : devii, dashamahAvidyA, devI

Location : doc_devii

Proofread by : NA

Source : Brahmavaivarta Purana, Ganesha Khanda, Adhyaya 36

Latest update : March 13, 2016

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

September 17, 2023

sanskritdocuments.org

kAlIstotraM parashurAmakRitaM

कालीस्तोत्रं परशुरामकृतम्

परशुराम उवाच ।
नमः शङ्करकान्तायै सारायै ते नमो नमः ।
नमो दुर्गतिनाशिन्यै मायायै ते नमो नमः ॥ १॥

नमो नमो जगद्धात्र्यै जगत्कर्त्र्यै नमो नमः ।
नमोऽस्तु ते जगन्मात्रे कारणायै नमो नमः ॥ २॥

प्रसीद जगतां मातः सृष्टिसंहारकारिणि ।
त्वत्पादौ शरणं यामि प्रतिज्ञां सार्थिकां कुरु ॥ ३॥

त्वयि मे विमुखायां च को मां रक्षितुमीश्वरः ।
त्वं प्रसन्ना भव शुभे मां भक्तं भक्तवत्सले ॥ ४॥

युष्माभिः शिवलोके च मह्यं दत्तो वरः पुरा ।
तं वरं सफलं कर्तुं त्वमर्हसि वरानने ॥ ५॥

रेणुकेयस्तवं श्रुत्वा प्रसन्नाऽभवदम्बिका । var जामदग्न्यस्तवं
मा भैरित्येवमुक्त्वा तु तत्रैवान्तरधीयत ॥ ६॥

एतद् भृगुकृतं स्तोत्रं भक्तियुक्तश्च यः पठेत् ।
महाभयात्समुत्तीर्णः स भवेदेव लीलया ॥ ७॥

स पूजितश्च त्रैलोक्ये तत्रैव विजयी भवेत् ।
ज्ञानिश्रेष्ठो भवेच्चैव वैरिपक्षविमर्दकः ॥ ८॥

इति श्रीब्रह्मवैवर्तपुराणे गणेशखण्डे षड्विंशोऽध्यायान्तर्गतम्
श्रीपरशुरामकृतं कालीस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

अर्थ
परशुराम द्वारा काली की स्तुति
परशुराम बोले - आप शंकरजी की प्रियतमा पत्नी हैं, आपको

नमस्कार है । सारस्वरूपा आपको बारंबार प्रणाम है। दुर्गतिनाशिनी को मेरा अभिवादन है । मायारूपा आपको मैं बारंबार सिर झुकाता हूँ। जगद्धात्री को नमस्कार-नमस्कार । जगत्कर्त्री को पुनः-पुनः प्रणाम। जगज्जननी को मेरा नमस्कार प्राप्त हो । कारणरूपा आपको बारम्बार अभिवादन है। सृष्टि का संहार करनेवाली जगन्माता! प्रसन्न होइये । मैं आपके चरणों की शरण ग्रहण करता हूँ, मेरी प्रतिज्ञा सफल कीजिये । मेरे प्रति आपके विमुख हो जाने पर कौन मेरी रक्षा कर सकता है? भक्तवत्सले! शुभे! आप मुझ भक्त पर कृपा कीजिये । सुमुखि! पहले शिवलोक में आपलोगों ने मुझे जो वरदान दिया था, उस वर को आपको सफल करना चाहिये । परशुराम द्वारा किये गये इस स्तवन को सुनकर अम्बिका का मन प्रसन्न हो गया और भय मत करो यों कहकर वे वहीं अन्तर्धान हो गयीं । जो मनुष्य भक्तिपूर्वक इस परशुरामकृत स्तोत्र का पाठ करता है, वह अनायास ही महान् भय से छूट जाता है । वह त्रिलोकी में पूजित, त्रैलोक्यविजयी, ज्ञानियों में श्रेष्ठ और शत्रुपक्ष का विमर्दन करनेवाला हो जाता है ।

यह स्तोत्र ब्रह्मवैवर्तपुराण के गणपतिखण्ड से उद्धृत है ।

NA

kAlIstotraM parashurAmakRitaM
pdf was typeset on September 17, 2023

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*